

हीट इंडेक्स

प्रलिस के लयः

भारत मौसम वजिज्ञान वभिग (IMD), हीट इंडेक्स, नगरीय ऊष्मा द्वीप प्रभाव, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधकिरण (NDMA) ।

मेन्स के लयः

भारत में हीट वेव से संबधति मुद्दे ।

चर्चा में क्यों?

भारत मौसम वजिज्ञान वभिग (India Meteorological Department- IMD) दलिली और देश के अन्य हसिसों में 'हीट इंडेक्स/ताप सूचकांक' चेतावनी प्रणाली शुरू करने की योजना बना रहा है ।

IMD के हालिया अध्ययनः

- IMD ने **हीट वेव** पर मौसम संबधी कारकों के प्रभाव और देश के "हीट वेव आपदा क्षेत्र" पर एक अध्ययन कया है ।
- "हॉट वेदर एनालसिस ओवर इंडिया" के अनुसार, IMD ने वशिलेषण कया कजिसि तंत्र से गर्मी मानव को प्रभावति करती है, वह जटलि है । यह तापमान, वकिरण, वायु और आर्द्रता के बीच परस्पर क्रियाओं का परणाम है ।
 - इस बात के मज़बूत प्रायोगिकि प्रमाण हैं कयिद आर्द्रता अधिकि है तो उच्च तापमान से मानसकि तनाव अधिकि होता है ।

प्रस्तावति हीट इंडेक्सः

- परचियः
 - हीट इंडेक्स तापमान के साथ-साथ आर्द्रता के स्तर की गणना करेगा ताकि इसकी उष्णता का अधिकि सटीक अनुमान प्रदान कया जा सके ।
 - अमेरिका में हीट इंडेक्स के प्रभाव के आधार पर चेतावनी प्रदान करने हेतु इसे कलर-कोडेड कया गया है ।
 - IMD भारत में एक समान कलर-कोडेड चेतावनी प्रणाली (Similar Color-coded Warning System) शुरू करने की योजना बना रहा है ।
- महत्त्वः
 - हीट इंडेक्स मानव स्वास्थय के लयि अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं ।
 - शरीर के बहुत अधिकि गर्म होने पर पशीना नकिलता है जसिके माध्यम से शरीर स्वयं के तापमान को नयित्त्रति करता है । यद पसीना वाष्पति नहीं हो पाता है, तो शरीर अपने तापमान को नयित्त्रति नहीं कर पाता है । वाष्पीकरण एक शीतलन प्रक्रया है । जब पसीना शरीर से वाष्पति हो जाता है, तो यह प्रभावी रूप से शरीर के तापमान को कम कर देता है ।
 - जब वायुमंडलीय नमी की मात्रा (अर्थात् सापेक्ष आर्द्रता) अधिकि होती है, तो शरीर से वाष्पीकरण की दर कम हो जाती है । मानव शरीर नम परस्थितियों में गर्म महसूस करता है । इसके वपिरीत सत्य यह है कतिब सापेक्ष आर्द्रता घट जाती है क्योंकि पसीने की दर बढ़ जाती है । शरीर वास्तव में शुष्क परस्थितियों में ठंडा महसूस करता है ।
 - हवा के तापमान एवं सापेक्ष आर्द्रता तथा ताप सूचकांक के मध्यसीधा संबध है, जसिका अर्थ है कहिवा का तापमान और सापेक्ष आर्द्रता में वृद्धि (कमी) होती है, हीट इंडेक्स बढ़ता है (घटता है) ।

हीटवेवः

- हीटवेव असामान्य रूप से उच्च तापमान की अवधिको संदर्भति करता है, भारत में मई-जून के महीनों के दौरान यह एक सामान्य घटना है और कुछ दुर्लभ मामलों में यह जुलाई तक भी बढ़ जाती है ।
- जब कसिी स्थान का अधिकितम तापमान मैदानी क्षेत्रों के लयि कम-से-कम 40 डिग्री सेल्सयिस एवं पहाडी क्षेत्रों के लयि कम-से-कम 30

डगिरी सेल्सयस तक पहुँच जाता है तब ऐसी स्थतिको हीटवेव माना जाता है ।

- वर्ष 2016 में [राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण \(National Disaster Management Authority- NDMA\)](#) ने लू के प्रभाव को कम करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख रणनीति तैयार करने हेतु व्यापक दशिया-नरिदेश जारी कयि ।

दलिली के वास्तवकि तापमान की तुलना में उच्च तापमान हेतु ज़मिमेदार कारक:

- नगरीय ऊष्मा द्वीप प्रभाव:** दलिली एक अत्यधिक शहरीकृत क्षेत्र है, जसिमें बड़ी मात्रा में कंकरीट, इमारतें और डामर की सतहें हैं। ये सतह ऊष्मा को अवशोषति करती हैं और उसे बनाए रखती हैं, जसिसे [नगरीय ऊष्मा द्वीप प्रभाव](#) उत्पन्न होता है। यह तापमान को वास्तवकि रूप से अधिक गर्म महसूस करा सकता है।
- वायु प्रदूषण:** [पंजाब और हरयाणा क्षेत्र में पराली जलाने](#), वाहन एवं औद्योगकि उत्सर्जन तथा नरिमाण गतविधियों से नकिलने वाली धूल के कारण दलिली में उच्च स्तर का वायु प्रदूषण होता है।
 - यह प्रदूषण ऊष्मा को रोक सकता है तथा शहर को गर्म रखते हुए एक व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।
 - साथ ही दलिली की उच्च आर्द्रता भी वायु प्रदूषण के स्तर को बढ़ा सकती है।
- जल नकियाँ से दूरी:** दलिली कसिी भी बड़े जल नकियाय जैसे- समुद्र या झील के पास स्थति नहीं है। इसका अर्थ है कजल से आने वाली ठंडी हवा का कोई स्रोत नहीं है, जसिसे हवा गर्म महसूस हो सकती है।

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/heat-index>

